उनके जीवन में 'विनय मूल धर्म' का सिद्धांत पूर्ण रूपेण घटित होता है। अब तो वह स्वयं ही गुरूणी पद पर आसीन हैं, पर वह हर समय अपने गुरूजनों की सेवा में अपनी गुरूणी सुधा जी की तरह तत्पर रहती हैं। हमने इन दोनों गुरूणी व शिष्या को जो भी सुझाव दिया, उन्होंने हमारी बात के अनुरूप इस का पालन किया। अपने स्वाध्याय का अमृत वह स्वयं बच्चों व अपने शिष्याओं को बांटती रही हैं। वह बच्चों को धार्मिक संस्कार के लिए हर तरह से तैयार करती हैं। बच्चों के धर्म शिक्षा के साथ साथ स्वयं भी कुछ न कुछ लिखने पढ़ने में तालीन रहती हैं। एक बार जो उनके चरणों में आता है वह उनसे कुछ न कुछ प्राप्त करता है। गुण ग्राहिता उनका प्रथम गुण है। पर निंदों से वह दूर रहती हैं। अपनी गुरूणी सुधा जी महाराज की तरह वह संसार में प्रशंसा की इच्छा नहीं रखती।

दरअसल साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज के समस्त परिवार में इतना सामूहिक प्रेम है कि ऐसा अन्यत्र देखने में नहीं आता। प्रथम दृष्टि में तो यह पता ही नहीं चलता कि कौन साध्वी दीक्षा में छोटी है कौन सी बडी। सभी का महत्वपूर्ण स्थान है। सभी साध्वीयां ध्यान, तप, साधना व लेखन कार्य में तालीन रहती हैं। हर समय नए साहित्य को पढ़ना इन सभी साध्वीयों के जीवन का अंग है। सभी साध्वीयों का परिचय संसारिक लोगों से न के बराबर है। सभी साध्वीयां अपनी अपनी गुरूणी के प्रति समर्पित हैं। ऐसे पुण्यशाली साध्वी परिवार जैन संसार में कम दिखते हैं। इन सभी साध्वी मंडल की प्रत्येक साध्वी का हमारे पर उपकार था, है और रहेगा। आज हम जो कुछ भी हैं। इन चारित्रात्माओं के आर्शीवाद के कारण हैं।

साध्वी स्वर्णकांता परिवार :

साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज का सारा साध्वी परिवार एक अनुशासन संघ है। साध्वी राजकुमारी जी, साध्वी सुधा जी, साध्वी स्मृति जी के साथ-साथ सभी साध्वीयां देव, गुरू व धर्म के प्रति समर्पित है। हर समय स्वाध्याय, तपस्या व ध्यान में लीन रहती हैं। सभी शिक्षित व सम्पन्न परिवार से संबंधित हैं। सभी का जीवन जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रचार व प्रसार को समर्पित है। कुछ साध्वीयां कवियित्री भी हैं। प्रवचन कुशल तो प्रत्येक साध्वी है। इन साध्वीयों का मंगलमय आर्शीवाद व विमर्श हमें मिलता रहता है। सभी साध्वीयों के पवित्र व वन्दनीय नाम इस प्रकार हैं :.

१. साध्वी श्री राजकुमारी जी
२. साध्वी सुधा जी
३. साध्वी श्रीवीर कांता जी
४. साध्वी श्री कमलेश जी (आप का स्वर्गवास हो चुका है।)
५. साध्वी श्री विजय जी
६. साध्वी श्री चन्द्र प्रभा जी
७. साध्वी श्री संतोष जी
८. साध्वी श्री किरण जी
९. साध्वी श्री श्रेष्ठा जी
१०. साध्वी श्री वीणा जी
११. साध्वी श्री समता जी
१२. साध्वी श्री सुदेश जी
१३. साध्वी श्री रक्षा जी
१४. साध्वी श्री सुयशा जी
१५. साध्वी श्री सुव्रता जी
१६. साध्वी श्री प्रीती जी

१७. साध्वी श्री कमला जी
१८. साध्वी श्री श्रुति जी
१९. साध्वी डा० श्री स्मृति जी
२०. साध्वी श्री प्रवीण जी
२१. साध्वी श्री चन्दना जी
२२. साध्वी श्री स्वाति जी
२३. साध्वी श्री तारामणी जी
२४. साध्वी श्री पूजा जी
२५. साध्वी श्री आरती जी

सभी साध्वीयों का जीवन साधना की दृष्टि से उत्कृष्ट रहा है। सभी साध्वीयां अपने बड़ों के प्रति कर्तव्य को पहचानती हैं। सेवा के मामले में तो वे एक दूसरे से बढ़कर हैं। कोई साध्वी किसी पर क्रोध या आवेश नहीं करती। स्व० साध्वी श्री स्वर्णकांता जी का परिवार स्व० आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी की दृष्टि में अनुशाषित साध्वी परिवार है। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को अध्ययन का बहुत शौंक था। अगर कोई जैन ग्रन्थ प्रकाशित हो तो महाराज श्री तत्काल इस की ५ प्रतियां मंगवाने के लिए श्रावकों को कहते। वह वर्षों तक स्वयं स्वाध्याय करती रहीं। गुरू की प्रेरणा शिष्या में स्वयंमेव आ जाती है। जीवन का कोई पल ऐसा नहीं जब इन साध्वीयों को कभी प्रमाद में देखा हो। सभी साध्वीयां हर समय धर्म क्रिया में लीन रहती हैं। लोगों को सद् कर्म करने का उपदेश देती हैं। नया ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहती हैं। अपने बडों की सेवा जिस ढंग से इन साध्वीयों ने की उस का उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है। ३ वष दिन रात जाग कर अपनी गुरूणी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की समर्पण भाव से सेवा की। २ - २ घंटे नींद ली। अंतिम संथारा के दिनों में तो सभी साध्वीयों ने गुरूणी को पाट

सुनाया था। इस ढंग से उन्होंने गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की अंतिम इच्छा पूरी की, वहीं श्री संघ ने उनकी सेवा से दंग रह गया। सभी साध्वीयां पुण्यवान हैं। अपने महाव्रतों की साधना में लगी रहती हैं।

प्रकरण १२

मेरी जैन तीर्थ यात्राएं

जीवन भ्रमण का प्रमुख स्थान है । भ्रमण हर प्रकार से ज्ञानवर्धक है । जव हम इतिहास स्थलों का भ्रमण करते हैं तो हम आस्था और श्रद्धा से भरे होते हैं । जो यात्राएं आस्था से की जाती हैं, वो आस्था के नए आयामों को जन्म देती हैं । इस दृष्टि में तीर्थ का महत्वपूर्ण स्थान है । जैन धर्म में दो प्रकार के तीर्थ माने गये हैं :-

क) स्थावर ख) जंगम

स्थावर तीर्थ :

स्थावर तीर्थ उस तीर्थ को कहते हैं जहां कोई प्रतिमा भूमि से प्राप्त होती है अथवा जिन स्थानों के तीर्थंकरों के कल्याणक हुए वह सभी क्षेत्र 'स्थावर तीर्थ' कहलाते हैं। भारत में हर राज्यों में तीर्थो की स्थापना है । इन तीर्थों में श्री महावीर जी, नाकोड़ा पार्श्वनाथ आदि तीर्थ आते हैं इतिहासिक तीर्थो में २४ तीर्थंकरों के वह क्षेत्र आते हैं, जहां तीर्थंकरों के पांच कल्याणक हुए, उनसे सम्वन्धित कोई इतिहासिक घटना हुई । इन तीर्थों में अयोध्या, राजगिरी, पावापुरी, हस्तिनापुर, प्रयागराज, वाराणसी, गिरनार समेत शिखर, पालिताना प्रमुख हैं । कई तीर्थ अपनी कला के कारण प्रसिद्ध हैं जिनमें राणकपुर, देवगढ़, आवु, अचलगढ़, केशरीया, कांगड़ा, हरिद्वार व श्रवण वेलगोला के नाम से प्रसिद्ध हैं । मैंने जो तीर्थ यात्राएं की हैं, उनके पीछे इतिहास व श्रद्धा दोनों छिपे हैं । यह तीर्थ मेरी आस्था का केन्द्र हैं । यहां आकर मानव को वीतरागता के दर्शन होते हैं । प्रभु

की छवि देखकर हमें आत्मिक शांति मिलती है । इसी आत्मिक शांति के लिये तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिये जाते हैं । इन यात्राओं से हमारा ज्ञान बढ़ता है ।

जंगम तीर्थ

दूसरे तीर्थ हमारे आचार्य, उपध्याय, साधु व साध्वी हैं जो हमें धर्म-उपदेश से मुक्ति का रास्ता बताते हैं । तीर्थ चाहे स्थावर या जंगम, सभी तीर्थ हमारे लिये वन्दनीय, पूजनीय व हमारी आस्था के प्रतीक हैं । जैन धर्म में एक मान्यता है कि वर्ष में एक बार तीर्थ यात्रा करने से आत्मा शुद्ध और धर्म की ओर अग्रसर होती है । मन व आत्मा शुभ भावों को प्राप्त करतें हैं, इस कारण तीर्थ यात्रा कर्म निर्जरा का कारण है । दोनों तरह के तीर्थ हमें अपनी इतिहासिक परम्परा की साहित्यिक जानकारी देते हैं । यह तीर्थ भारतीय संस्कृति का अनूठा संगम है, जहां विभिन्न प्रदेशों के लोग व संस्कृति के दर्शन होते हैं । विभिन्न प्रदेशों की परम्परा व मान्यताओं से हम अवगत होते हैं । विभिन्न भाषाओं, रीति-रिवाजों, वेश-भूषा से हम इस क्षेत्र की सांस्कृतिक एकता के दर्शन करते हैं । मेरी तीर्थ यात्रा दो प्रकार से सम्पन्न हुई । मेने प्रथम तीर्थ यात्रा १९८८ में अपने धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन, मालेरकोटला के साथ शुरु की । इसका कारण यह था कि हमारी काफी समय से इच्छा थी कि हम इकट्ठे जैन संस्कृति के प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्रों की यात्रा करें । दूसरी यात्रा मैंने अपने परिवार के परिजनों के साथ की । इसमें मुनि दर्शनों के साथ तीर्थ यात्रा भा सम्पन्न की थी ।

मेरी प्रथम तीर्थ यात्रा :

तीर्थ का अर्थ है किनारा । जो हमें संसार सागर के

पार किनारे पर लगाये वह तीर्थ है । इस प्रकार की तीर्थ यात्रा मैंने जीवन के कुछ पल निकालकर अपने प्रिय शिष्य धर्म भ्राता रवीन्द्र जैन मालेरकोटला के साथ की थी । उन दिनों मैं मंडी गोविन्दगढ़ आ चुका था, अपना काम भी शुरु कर चुका था अपने पूज्य माता-पिता की आज्ञा लेकर मैंने यह कार्यक्रम बनाया । मेरी भावना थी कि मैं अपने धर्मभ्राता मालेरकोटला के साथ तीर्थों की इतिहासिक यात्रा करूं । वैसे मेरा धर्मभ्राता मेरी आज्ञा से १६८० में इन तीर्थों की यात्रा कर चुका था तीसरा कारण था राष्ट्र संत उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म० की व्योवृद्ध अवस्था थी । मैं उनसे पहली वार धर्मभ्राता के साथ आगरा में १६७२ में मिला था । अब मेरे भ्राता रवीन्द्र जैन का कहना था कि तीर्थ क्षेत्र के साथ महाराज श्री अमरमुनि म० के दर्शन लेंगे । वह व्योवृद्ध अवस्था में हैं, यह कुछ कारण थे जिन्होंने मुझे यह यात्रा करने की प्रेरणा दी थी । मेरे धर्म भ्राता रवीन्द्र जैन मुझे इन तीर्थों की महानता वताते रहते थे । मेरे मन में उनकी हर वात का एक ही उत्तर होता "जव भगवान वुलायेंगे, हम अवश्य जायेंगे ।" जव उनका वुलावा आया तो भला कौन रोक सकता है ? परिस्थितियां अपने आप ठीक होने लगती हैं । हमारे परिवार के लोग मेरी तीर्थयात्रा से वहुत प्रसन्न थे । यह मेरे जीवन की सवसे लम्वी तीर्थयात्रा थी जिसमें लगभग १० दिन का समय व्यतीत हुआ । शायद दो रात को छोड़कर हम लगभग जागते ही रहे । यात्रा दिन रात जारी रहती, क्योंकि इतनी लम्वी यात्रा मेरे विचार से ऐसे ही सम्पन्न हो सकती है। इस यात्रा में मुझे वहुत आध्यात्मिक लाभ हुआ । यह यात्राएं मेरे लिये वहुत ही ज्ञानवर्धक रहीं । मुझे गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त था ।

यात्रा की तैयारियां व यात्रा आरम्भ :

हम यात्रा की तैयारियों में लग गये, मैंने अपने धर्मभ्राता श्री रवीन्द्र जैन से कहा, "तुम १० दिन दस की छुट्टी ले लो, हम किसी भी दिन निकल सकते हैं, स्वयं को तैयार रखना ।" एक आज्ञाकारी शिष्य की तरह उसने मेरे आगे अपना शीश झुका दिया । अब सीट बुक करवाने का काम था, सीट की बुकिंग लुधियाना से होनी थी। सो यह कार्य मेरे धर्मभ्राता श्री रवीन्द्र जैन ने किया । मगध एक्सप्रैस ट्रेन हमारे लिये ठीक थी, वह ट्रेन देहली रात्रि ८.३० वजे चलकर, प्रातः ११ वजे पटना पहुंचती थी । बुकिंग हो गई थी, किन्तु सीट की सूचना अभी नहीं मिली थी । एक दिन किसी कार्यवश हम दोनों देहली गये । वहां से बुकिंग के बारे में पता किया, पहली बार कम्पयूटर पर बुकिंग देखी, हमारे नाम व सीट नंबर नजर आये तो दिल को शांति मिली । इधर सीट कन्फर्म हुई, उधर मेरे धर्मभ्राता की छुट्टी भी मन्जूर हो गई। दोनों कार्य आवश्यक थे । सो वह शुभ घड़ी आ पहुंची जब हम दोनों के माता-पिता के आशीर्वाद व आज्ञा से प्रस्थान किया । मेरे धर्मभ्राता पहले मंडी गोविन्दगढ़ पहुंचे।

मंडी गोविन्दगढ़ से देहली की ओर प्रस्थान किया । हम कार द्वारा अम्बाला गये, वहां से देहली के लिये ट्रेन मिलनी थी । दोपहर को हम दिल्ली पहुंचे, वहां कुछ छोटे-बड़े काम थे । यात्रा सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना जरूरी था। मैंने इसलिये देहली के प्राचीन दिगम्बर जैन लाल मन्दिर जाना मुनासिब समझा। वहां पहले हमने प्रभु के दर्शन किये । यात्रा की सफलता व शुभ कामना के लिये प्रार्थना मांगी। प्रभु पार्श्वनाथ व माता पद्मावती से आशीर्वाद प्राप्त किया । इस मन्दिर की दुकान से हमने जैनतीर्थ गाईड व नक्शे खरीदे जो यात्रा के लिये अनिवार्य थे ।

जैसे मैंने पहले उल्लेख किया है कि यह ट्रेन रात्रि ८:३० वजे चलनी थी । शाम का भोजन करने के पश्चात् हम ट्रेन की ओर रवाना हुए । जव हमने ट्रेन की सीट ग्रहण की तो वहां का नजारा देखने योग्य था । लोग रात्रि के कारण अपनी सीटों पर सोने को तैयार थे । वह वरसात के दिन थे । मैंने नवकार मंत्र की एक माला मन में फेरी । रात्रि अपनी चरम सीमा पर थी । यात्री धीरे-धीरे सोने लगे, पर सारे डिव्वे में एक आवाज हर पल गूंजती रही, वह थी खाने-पीने का सामान बेचने वाले हाकरों की । इनके कदमों की चहल-पहल व आवाजें हमें सारे सफर में सुनाई देती रहीं । यह विचित्र अनुभव था जिस रात्रि में भी दिन का नजारा अनुभव हुआ ।

हमारी सीटें चाहें दो थीं, परन्तु हमारा मन सारी रात वातें करने का था । मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन इसे सत्संग का नाम देते हैं, वह मुझे हमेशा 'साहिव' संज्ञा से पुकारते से आये है । जिसकी परिभाषा उन्होंने श्रमणोपासक पुस्तक में श्रद्धा से की है। ट्रेन अपनी तीव्र गति से चल रही थी । दिल्ली से सारी ट्रेने उन दिनों पंजाव में डीजल व कोयले से चलती थीं । ट्रेन अपनी गति से आगे वढ़ रही थी, यह ट्रेन वहुत खास स्टेशनों पर रुकती थी । पहले आया कृष्ण जन्म भूमि का तीर्थ मथुरा, जो संसार में प्रसिद्ध तीर्थ है, जिसकी यात्रा १९७२ में पहले कर चुके थे । फिर स्टेशन आगरा आया, जो मुगल काल के समय राजधानी थी । मुगल स्मारकों में ताज महल, किला, सिकन्दरीया, दयालवाग, फतेहपुर सीकरी के लिये प्रसिद्ध है । फिर आया भारत का औद्योगिक नगर कानपुर, जो वड़े उद्योगों व चमड़े के उद्योग का मुख्य केन्द्र है । यह शहर उत्तर प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था का केन्द्र है । कानपुर में देखने को वहुत कुछ था । कानपुर

से आगे ट्रेन स्वः प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी की संसदीय सीट राय वरेली पहुंची, उसके वाद आया इतिहासिक तीर्थ इलाहावाद, जो त्रिवेणी संगम के नाम से प्रसिद्ध है । इस संगम के किनारे किले में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का वह वृक्ष है, जिसके नीचे इन्हें केवल्य का ज्ञान प्राप्त हुआ था ।

फिर आया तीर्थ वाराणसी या वनारस । यह तीर्थ हिन्दू, जैन व वौद्ध परम्परा का इतिहासिक व धार्मिक स्थान है । इसे काशी के नाम से जाना जाता है । यहां वड़ा स्टेशन मुगल सराय है, जो कोयले की अच्छी मंडी है । यहां से कोयला ट्रकों में भरकर पूरे भारतवर्ष में पहुंचता है ।

मुगल सराय में ट्रेन सवसे अधिक समय रुकी । यह तीर्थ हमारी यात्रा में था लेकिन हमें सर्वप्रथम पटना पहुंचना था । वाराणसी पहुंचते-पहुंचते दिन निकल आया । यहां सवसे वड़ी जरूरत स्नान की थी । यह व्यवस्था ट्रेन में नहीं थी । अव सूर्य के दर्शन हो चुके थे । ८ वजे के करीव ट्रेन आरा पहुंची । यह स्टेशन श्री देव कुमार जैन शोध संस्थान के लिये काफी प्रसिद्ध है । यहां से जैन कम्यूनिटी नामक शोध पत्रिका प्रकाशित होती है । इस संस्था ने वहुत से जैन विद्वानों को जन्म दिया है । यहां पर विशाल पुस्तकालय व हस्तलिखित लेखों के भण्डार हैं, जिसके दर्शन करने के लिये विदेशों से लोग यहां आते रहते हैं ।

ट्रेन के आरा से गुजरते ही विहार की राजधानी पटना में पहुंचे । स्टेशन पर उतरकर स्नान किया । फिर नाश्ता आदि किया । अव हम पटना शहर देखने में व्यस्त हो गये । हमें कार्यक्रम अनुसार शहर को देखना था । यह पटना शहर पुरातन जैन शहर है । इसका निर्माण राजा श्रेणिक के पोत्र ने राजा उदयन ने गंगा किनारे करवाया । राजा उदैयन

ने करवाया यहां पाटल वृक्षों की भरमार थी, इस कारण इसका नाम पाटलीपुत्र पड़ा । यहां घना जंगल था तथा पाटल वृक्ष की भरमार थी । इसी कारण श्रेणिक की नई राजधानी का नान पाटलीपुत्र पड़ा । मौर्य काल तक यह नगरी अपने विकास की चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी ।

पाटलीपुत्र का नाम धीरे-धीरे पटना पड़ गया । इसका प्राचीन नाम पाटलीपुत्र है । यह नाम जैन ग्रंथों में उपलब्ध होता है । जैन आगमों की एक वाचना यहीं पर सम्पन्न हुई । यहीं आचार्य स्थूलिभद्र का जन्म हुआ । कौशावेश्या के यहां लम्बा समय विताया । मुनि बनने के बाद इसी वेश्या को धर्म उपदेश देकर साध्वी बनाया। नंद वंश के राज्य में स्थूलिभद्र के पिता, भाई मन्त्री रहे थे । उनके भाई साधु बने । सात बहिनों ने दीक्षा ली । यहीं महावीर के श्रावक सुदर्शन का स्थान है, उनसे सम्बन्धित कुंआ गुलजार बाग में स्थित है । सभी धर्मों के लिये यह पवित्र स्थान है । गंगा नदी पर विशाल पुल गांधी ब्रिज के नाम से संसार में प्रसिद्ध है । अंग्रेजों ने इस शहर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया । सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह का जन्म स्थान भी पटना है ।

राजगृह से श्रेणिक कुछ समय तक चम्पा में रहा । फिर उसने राजधानी बनाया । जैसे पहले बताया गया है मौर्य वंश के शासनकाल में यह राजधानी इतने विकास पर थी कि चीनी व यूनानी यात्रियों ने इस नगर की प्रशंसा की है । यह नगर इतिहासिक व पुरातत्व की धरोहर है ।

यह नगर सभी धर्मों व परम्पराओं से संबंधित प्राचीन नगर है । यहां विहारी भाषा में लोग वातचीत करते हैं । यहां के लोगों में जैन धर्म के बारे में जानकारी न के बराबर है । असल में मारवाड़ी और राजस्थानी व्यापारी तीर्थक्षेत्र को

देखरेख करते हैं । लोग बहुत पछड़े हुए हैं, लोगों का खानपान भी शुद्ध नहीं, पर तीर्थ कमेटियों की व्यवस्था से यात्रियों को कोई दिक्कत नहीं आती । वैसे भी हर तीर्थ पर बहुत सारी धर्मशाला व भोजनशालाएं यात्रियों में कठिनाईयों को दूर करती हैं । इस सदीयों में जैन एकता के कारण हम पटना शहर में संख्या निरन्तर बढ़ रही है। मैंने वर्तमान पटना शहर की स्थिति का एक यात्री के नाते विवेचन किया है । हम अब स्टेशन से बाहर आ चुके थे । यह नगर वैसा ही था जैसा बिहार का आम शहर । मुझे यह पता चला कि बिहार में दो श्रेणी के लोग मिलते हैं धनवान या गरीब । मध्यम श्रेणी यहां नहीं है, खेती न के बराबर है । बिहार में कोयला, तांबा, जिस्त, अभ्रक भरपूर मात्रा में निकलता है । बिहार के मूल निवासी अभी भी छुआछूत में विश्वास करते हैं । देखा जाये तो बिहार में दो धर्म हैं-वैदिक और मुस्लिम । कुछ पिछड़ी श्रेणी के लोग ईसाई व बौद्ध हैं । पर जैन धर्म का प्रचार हजारों वर्षों से न होने कारण बिहार के मूल निवासी जैन कम मिलते हैं । वहां एक जाति सराक है जो जैन हैं यह जाति बिहार, बंगाल, उड़ीसा में मिलती है । इसे जैन धर्म का बचा-खुचा रूप कहा जा सकता है । यह लोग शाकाहारी हैं, प्रभु पार्श्वनाथ के उपासक हैं, खेती से आजीविका चलाते हैं, कई मुनि इस जाति के विकास में लगे हैं।

पटना की यात्रा :

पटना शहर के प्राचीन नगरों में कुसुमपुर, पुष्पपुर भी उपलब्ध होते हैं । हम नगर में घूम रहे थे और सोच रहे थे कि यात्रा कहां से शुरु की जाए ? कभी यह वैभवपूर्ण नगर था । हमने सर्वप्रथम एक आटोरिक्शा लिया, उसे पटना के इतिहास स्थल दिखाने को कहा । सबसे पहले पटना स्थिति

प्राचीन जैन मन्दिर में गये । दोमंजिले इस मन्दिर में विभिन्न तीर्थंकरों की भव्य व विशाल श्याम वर्णीय प्रतिमाएं हैं । उस समय मन्दिर में आरती चल रही थी । यह श्वेताम्वर परम्परा का काफी प्राचीन मन्दिर है । यहां प्रतिमाएं भव्य, विशाल व काले पत्थर की हैं । यह जैन मन्दिर जैनधर्म का इतिहासिक मन्दिर है । इसी के भव्य परिसर में १६६६ को सिक्खों के दशम् गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह का जन्म हुआ था । यह घटना जैनों व सिक्खों के रिश्तों पर प्रकाश डालती है । यह मन्दिर सेठ की हवेली का भाग था । अव उस हवेली के मध्य में दीवार वना दी गई है । इस मन्दिर के जिस भाग में ६वें गुरु श्री तेग वहादुर जी सपरिवार ठहरे थे, वहीं गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म स्थान है । १६८० तक इस मन्दिर व गुरुद्वारे का रास्ता तक एक था । अव दीवार चाहे वन गई है, पर मन में कोई दीवार नहीं । मन्दिर व गुरुद्वारा आपसी प्रेम की उदाहरण है । कुछ सामाजिक व्यवस्था को ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया गया है । हर धर्म को अपनी अलग पहचान रखनी पड़ती है, इस दृष्टि से गुरुद्वारा व मन्दिर एक परिसर होते हुए एक भेद रेखा खींची गई है ।

हम लोगों ने प्रतिमाओं को श्रद्धा से निहारा, फिर प्रभु की पूजा विधि व श्रद्धा सहित की । इस प्रकार की भव्य प्रतिमाओं वाला परिसर कम ही दिखाई देता है । मन्दिर के वाद हम गुरुद्वारे के विभिन्न परिसरों के दर्शन किये । वहां के एक पंजावी युवक ने हमें पंजाव का जानकर वहुत सम्मान दिया । उन्होंने गुरुद्वारे की प्राचीनता वताते हुए कहा है कि गुरु तेग वहादुर जव धर्म प्रचार हेतू, विहार, वंगाल व आसाम हेतू जा रहे थे तो गुरु पत्नी गर्भवती थी । उन्होंने इसी धर्मशाला में सेठ जी की देखरेख सानिध्य में माता को

रखा । सेठ जी ने गुरुपत्नी का हर प्रकार से ध्यान रखा, फिर गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म हुआ । इस महल में गुरुजी की वाल-लीलाएं हुई । गुरुजी का कुंआ वहुत प्रसिद्ध स्थान है । इसके वाद एक अन्य गुरुद्वारे के दर्शन किये, जो एतिहासिक था । हम एतिहासिक स्थल वैशाली जाना चाहते थे जिसके वारे में विद्वानों का मानना है कि यह प्रभु महावीर की जन्म स्थली है । जैन इतिहास में प्रभु महावीर के ननिहाल इसी वैशाली में थे । सारे गुरुद्वारे संगमरमर से वनाये गये हैं, वड़ा यात्री निवास व लंगर की व्यवस्था अति सुन्दर है।

हमने पटना शहर के कई इतिहासिक स्थानों का भ्रमण किया । इन सवमें से महत्वपूर्ण था पटना म्यूजियम । यह अजायवघर अंग्रेजों ने १५० वर्ष पूर्व स्थापित किया था । इसमें प्राचीन मुर्तियों के अवशेष हैं, जिनका संवंध जैन, वौद्ध व हिन्दू परम्परा से है । इस अजायवघर में दो महत्वपूर्ण वस्तुएं अभी तक मुझे ध्यान में हैं । एक है मौर्य कालीन तीर्थंकर प्रतिमा, जो भारत की सव प्राचीन प्रतिमा मानी जाती है। यह प्रतिमा हड़प्पा से मिली कायोत्सर्ग की प्रतिमा से मिलती जुलती है । इस म्यूजियम में कुषाण, मौर्य, गुप्तकाल के वहुत नमूने हैं । विदेशों के अजायवघरों से मिली वहुत सारी वस्तुएं इस भव्य म्यूजियम में प्रदर्शित की गई हैं । इस अजायवघर में सवसे नई वस्तुओं में से एक हैं करोड़ों वर्ष पुराना वृक्ष - जो अव पत्थर का रूप धारण कर चुका है । यह एक प्राकृतिक घटना है जो इस म्यूजियम की शान है । यह म्यूजियम पुरातत्व प्रेमियों के लिये तीर्थ से कम नहीं है । वैसे भी पटना में कई निजी पुस्तकालय, संग्रहालय आदि हैं, इन में खुदावख्श लाइव्रेरी, पटना विश्वविद्यालय, गांधी मैदान, विहार की राजधानी की शान है । यहां प्राचीन

पाटलीपुत्र के खण्डहर भी मिलते हैं । पटना शहर में मारवाड़ी व गुजराती समाज के घर हैं जो यहां लोहे व अन्य धातुओं के व्यापार करते हैं । पटना शहर में गरीवी के दर्शन होते हैं, औरतें साड़ी पहनती हैं । अधिकांश हिन्दू जाति में यादव हैं, दूसरे मुसलमान हैं, यहां की औरतें गरीवी के शोषण का शिकार भी रहती हैं । विहार में नक्सलवाड़ी लहर व्यापक स्तर पर सावधान रहना पड़ता है विहार के बारे में एक कहावत मशहूर है कि अगर यहां किसी गांव को आग लग जाये, पानी नहीं उठाते, हथियार लेकर भागते हैं । विहार शिक्षा के मामले में पिछड़ा राज्य है । इसी अज्ञानता के कारण राजनैतिक दल विभिन्न प्रकार से लोगों को भटकाते हैं, रोजाना कत्ल होते हैं, गांव को आग लगा दी जाती है, सामूहिक वलात्कार की घटनाएं होती हैं । बुद्ध और महावीर की भूमि पर यह कलंकित घटनाएं अत्यन्त शर्मनाक हैं, पर यह लोग बुद्ध और महावीर को भूल चुके हैं । यह लोग आज से २६०० वर्ष पहले के युग में जी रहे हैं, इनकी सोच वहुत ही छोटी है, पर जैनों के कारण इस धरती का कणकण पूज्नीय व वन्दनीय है । यहां हमारे तीर्थंकरों के कल्याणक हुए हैं । इस क्रम में हम पटना शहर दोपहर तक घूमे । फिर शाम को प्रभु महावीर से संबंधित वैशाली पहुंचे ।

वैशाली :

मैंने वैशाली का वर्णन किया है । वैशाली प्रभु महावीर के नाना व श्रावक राजा चेटक की राजधानी थी, वैशाली गणतन्त्र की जिसमें ७७०७ राजा थे, सभी प्रभुता सम्पन्न थे । यह राजा रथ मुशल संग्राम में राजा चेटक की सहायतार्थ आये थे। इसमें काशी, कौशल आदि के १८ राजा प्रमुख थे

। राजा कोणिक के साथ इनका संग्राम वैशाली में हुआ था । वैशाली का वर्णन वाल्मीक रामायण में भी आया है । बुद्ध ग्रंथों में वैशाली की भव्यता का वर्णन है, वैशाली के लोगों ने महात्मा बुद्ध को धरती के देव कहा है । वैशाली के राजा सामूहिक फैसलों के लिये आपस में जुड़ते थे । उनके निर्णय वर्तमान गणतन्त्र के लिये उदाहरण हैं । जैन व बौद्ध धर्म के संघ के निर्माण में इस व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है ।। यहां की रानी चेलना थी, जो भगवान महावीर की समर्पित उपासिका थी । राजा चेटक किसी अजैन की कन्या नहीं लेता था, पर यह विवाह प्रेम विवाह था । इसलिये राजा श्रेणिक एक राजगृह से वैशाली तक एक सुरंग का निर्माण कराया था । चेलना व उसकी वहिन दोनों श्रेणिक को चाहती थीं । चेलना पहले पहुंच गई, राजा श्रेणिक चेलना को भगाकर ले गया । उसी की वहिन लज्जावश घर नहीं गई, वह प्रभु महावीर की श्रमणी वन गई । वाकी सभी राजा जैन थे, रानी चेलना पटरानी वनी । राजा श्रेणिक वौद्ध था ।। रानी चेलना अपने पति से प्रभु महावीर का भक्त वनाना चाहती थी, पर धर्म श्रद्धा आत्मा का विषय है, वनने से कोई धार्मिक नहीं वनता, पर जीवन में कुछ प्रसंग ऐसे होते हैं कि वह जीवन धारा को मोड़ कर रख देते हैं । ऐसी ही घटना का विवेचन हम आगे करेंगे, जिस घटना ने राजा श्रेणिक को प्रभु महावीर का परम भक्त वना दिया ।

पर यहां तो हम वैशाली की वात कर रहे हैं, दोपहर को हमने वैशाली की ओर प्रस्थान किया, इसके लिये छोटा रास्ता गांधी पुल से जाता था । पुराना रास्ता गांधी पुल से जाता था । पुराना रास्ता किश्ती का भी है । यह गंगा का पार है । इस नदी को प्रभु महावीर ने वैशाली से राजगृह जाने के लिये प्रयोग किया था । उनके जीवन की अनेक

घटनाओं की साक्षी यह गंगा है । हमने बस द्वारा रास्ता तय करने का निश्चय किया क्योंकि पुल के कारण वैशाली का रास्ता कम हो गया था । यह पुल भारत की प्रकृति का प्रतीक है । वैशाली अव तो जिला बन चुका है । उन दिनों मुजफ्फरपुर जिले में यह नगर पड़ता था । हम भव्य पुल के माध्यम से गंगा नदी पार कर रहे थे । हमें गंगा की विशालता देखने का प्रथम अवसर था । यही गंगा नदी थी जिसे नाव द्वारा पार करते समय प्रभु महावीर को एक देव ने कष्ट पहुंचाया था । तब मल्लाह ने कहा था कि इस महापुरुष के कारण गंगा का तूफान हमारा कुछ नहीं विगाड़ सकेगा । प्रभु महावीर की कृपा से सभी यात्री कुशलतापूर्वक किनारे पर लग गये थे ।

पुल पार करते ही हाजीपुर थाना आता है । इससे कुछ किलोमीटर ही वैशाली की भव्यता के दर्शन होते हैं । हमारा सामान भी हमारे साथ था । अभी तय नहीं था कि हम कहां रुकेंगे । हम अव वैशाली में थे, सवसे पहले हम इतिहासकारों द्वारा मान्य कुण्डग्राम में वह स्थल पर पहुंचे जिसे भारत सरकार प्रभु महावीर की जन्म भूमि घोषित कर चुकी है । कहते हैं इस स्थान को लोगों ने संभाल कर रखा है । इस भूमि पर कभी हल नहीं चलाया । यह खोज ७० वर्ष की है । वैसे श्वेताम्वर व दिगम्वर अपना-अपना जन्म स्थान अलग मानते हैं । इसी कारण यहां एक दिगम्वर मन्दिर है । जिसमें पोखर से निकली प्रभु महावीर की काले रंग की प्रतिमा विराजमान है । यही भारत सरकार स्थापित अहिंसा प्राकृत जैनशोध संस्थान है । जैन देश-विदेश में विद्वान करते हैं । सुन्दर परिसर है, हमने अपना पंजावी साहित्य यहां के पुस्तकालय को भेंट किया, छोटा सा वाजार है जहां सव्जी वेचने वाले वैठे थे ।

वैशाली में अशोक का स्तूप लाल पत्थर का बना हुआ है, जिसे देखने हजारों सालों से लोग आते हैं । जैन धर्म से सम्बन्धित एक स्तूप जन्म स्थान पर स्थित है, जहां कमलाकार में चरण बने हैं, हम वहां गये । प्रभु महावीर के जन्म स्थल को प्रणाम किया, क्योंकि यह विद्वानों द्वारा मान्य है । वहां के चित्र हमने खींचे, फिर यही चित्र हम पहले म्यूजियम के ले चुके थे । फिर वैशाली जैन शोध संस्थान के चित्र भी लिये । फिर हम उस स्थान पर गए, उसके कण-कण का निरीक्षण किया जहां प्रभु महावीर का छोटा सा मन्दिर है । यह क्षेत्र हरा भरा है । यहां केला खूब होता है, ताड़ के वृक्ष बहुत हैं ।

वैशाली का कण-कण खण्डहरों से भरा पड़ा है । हर कण-कण की अपनी कहानी है । यह उस विशाल विनाश का दृश्य प्रस्तुत करते हैं, जिसका वर्णन भगवती सूत्र व निरयावालिका सूत्र में वर्णन किया गया है । बौद्ध ग्रन्थों में इस विनाश का वर्णन है । बौद्ध ग्रन्थों में कोणिक को अज्ञातशत्रु कहा गया है जो उनका विशेषण है । मात्र एक हाथी और नौलखा हार के लिये उसने अपने दस भाईयों समेत अपने नाना चेटक को मार डाला । असंख्य सैनिक घोड़े, हाथी इस रथ इस युद्ध में काम आए । आठ किलोमीटर के घेरे में एक मैदान साफ किया गया । दोनों ओर की सेनाएं लड़ीं, वैशाली का विनाश हो गया । यही कहानी वैशाली के कंकर-पत्थर कहते हैं ।

हम आगे बढ़ रहे थे, शाम होने जा रही थी, गर्मी में सूर्य देर से अस्त होता है, इसी कारण हम शाम तक वैशाली घूमे । फिर यहां की नगरवधु आम्रपाली के उद्यान में घूमे । वैशाली की नगरवधु भगवान बुद्ध के दर्शन करने यहां आई थी, उसने भगवान बुद्ध से प्रार्थना की कि प्रभु आप मुझ

जैसी औरत के घर पधारे, मुझे आपने सम्मान दिया, मैं आपको कुछ देना चाहती हूं ।

महात्मा बुद्ध ने कहा, "देवानुप्रिया ! जो देना है, संघ को दो, संघ को दिया दान मुझे स्वयं मिल जाता है ।

आम्रपाली बोली, "मैं अपना उद्यान संघ को उपहार स्वरूप देना चाहती हूं, मेरी तुच्छ भेंट स्वीकार करें ।" बुद्ध ने यह भेंट स्वीकार की । अब जब भी महात्मा बुद्ध पधारते तो इसी उद्यान में ठहरते थे । यह उद्यान के खण्डहर बहुत विशाल भूखण्ड में फैले हुए हैं । इसमें से कुछ स्थान पर इसकी खुदाई है जिसमें महल के खण्डहर भी मिले हैं ।

बौद्ध भिक्षुओं के रहने के प्रचीन विहार के खण्डहर भी देखे । यहां सारी सम्पदा लाल पत्थर की बनी हुई है । इन सब को कैमरे में कैद किया । इस सारे सफर में मेरा धर्म भ्राता रवीन्द्र जैन मेरे साथ साये की तरह रहा । मेरा धर्म भ्राता मेरी हर आशा पूरी करने में तत्पर रहता है । जहां समर्पण है, वहां धर्म है । धर्म का सहज रास्ता सहज समर्पण है ।

शाम हो चुकी थी, बस का समय नहीं था, हम घूम चुके थे । वैशाली के इतिहासक स्थल पर हमें शीश झुकाने का सुअवसर मिला । जन्म स्थान का उद्घाटन भारत के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजिन्द्र प्रसाद जी ने किया था । प्राकृत हिन्दी, अंग्रेजी भाषा में एक शिलालेख लगा है, इस स्थल के पास बनिया गांव है, जो प्राचीन वाणिज्य गांव कहलाता था । इस नाम के कई गांव जैन इतिहास में मिलते हैं । हमने एक जीप ली, यहां जीप की व्यवस्था और ढंग की है, यहां ड्राइवर के साथ अंगरक्षक भी हथियार सहित चलते हैं । गाड़ीयां भरकर चलती हैं । हम पटना लौटे, हमें पटना में आकर पता चला के वैशाली में इतनी देर से आना जान

जोखिम में डालना है, पर हमें तो प्रभु महावीर का आशीर्वाद प्राप्त था । हमें किसका भय हो सकता था । भय तो हिंसा का लक्षण है, अहिंसा तो अभय प्रदान करती है ।

हम पटना में होटल की तलाश में घूम रहे थे । रात्रि के ११ वजे हमें होटल राजस्थान मिला । आधी रात्रि में हमें खाना मिला, जैसे-तैसे खाना खाया, पर रात्रि की थकावट के वाद सो नहीं सके क्योंकि आगे का कार्यक्रम तय करते रहे । विहार में गर्मी भी अधिक पड़ती है और ठंड भी अधिक पड़ती है । होटलों वाले से विहार में हमारा पहला अनुभव था फिर भी होटलों की सेवा अच्छी थी । शुद्ध शाकाहारी भोजन प्राप्त हो गया था ।

जैसे-तैसे करते रात्रि गुजरी, सवेरे को तैयार हुए, अव अगले मुकाम की तैयारी थी, पहले नाश्ता किया, फिर वस स्टैंड पर पहुंचे । हम राजगृह जाना चाहते थे । इसके लिये वस तैयार खड़ी थी । हमें यह भी पता चला कि कई टूरिस्ट वसें पटना, विहार शरीफ, राजगिरी (राजगृह) पावापुरी की यात्रा करवा शाम को पटना वापस हो जाती थीं । पर हम तीर्थ यात्री थे । तीर्थ यात्रा के जो नियम होते हैं । उनका पालन यथासंभव हमें करना था, पर रात्रि भोजन का नियम नहीं चल सका, यह हमारी कमजोरी है कि इस नियम का पालन नहीं कर सके । एक और वात वताने की है कि वैशाली की स्थापना इक्ष्वाकु और अलम्भुषा के पुत्र विशाल ने की थी, कई भागों को मिलाकर इसे विशाल रूप दिया गया, इसी कारण इसका नाम वैशाली पड़ा । यहां ठहरने के लिये एक जैन धर्मशाला व विहार सरकार पर्यटन विभाग का सूचना केन्द्र है । दोनों स्थानों के अतिरिक्त टूरिस्ट गैस्ट हाऊस में ठहरने की व्यवस्था है । परन्तु इस व्यवस्था का पता हमें काफी समय के वाद चला। हाजीपुर से वैशाली की